DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

Congress

Part -6

होमरूल एवं माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार

Home Rule
स्वराज/स्वशासन

होमरूल आंदोलन –

⇒ प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारतीयों के द्वारा जिस आंदोलन का संचालन किया गया, उसे 'होमरूल आंदोलन' के नाम से जाना गया।

उद्देश्य – ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहते हुए शांतिपूर्ण और संवैधानिक आंदोलन के तरीकों से स्वशासन को प्राप्त करना था।

प्रेरणास्त्रोत – आयरलैंड में रेडमांड के नेतृत्व में चलने वाला होमरूल आंदोलन था, जिसके लिए लंदन में स्वशासन की बात चल रही थी।

⇒ होमरूल शब्द के प्रथम प्रयोक्ता आईजक बट्ट थे, जिन्होंने 1870 के दशक में चार्ल्स स्टीवर्ट पार्नेल के साथ मिलकर आयरलैण्ड में एक होमरूल लीग की स्थापना की।

⇒ भारत में इस आंदोलन के मुख्य नेतृत्वकर्ता एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक थे।

⇒ एनी बेसेंट ने गांधी जी को भी होमरूल लीग के संस्थापकों में शामिल करना चाहा था, परंतु गांधी जी युद्ध के दौरान किसी ऐसे आंदोलन के पक्ष में नहीं थे, जो ब्रिटिश सरकार के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न कर सके।

⇒ गांधी जी का यह भी विश्वास था कि युद्ध की समाप्ति के पश्चात् ब्रिटिश सरकार स्वमेव भारत को स्वशासन प्रदान कर देगी। इसलिए, इसके लिए किसी भी प्रकार के संवैधानिक आंदोलन चलाए जाने की जरूरत नहीं है।

⇒ होमरूल आंदोलन चलाने के लिए दोनों ने अपने – अपने होमरूल लीग की स्थापना की, जिसका कारण एनी बेसेंट के शब्दों में – "तिलक के कुछ लोग मुझे पसंद नहीं करते हैं और मेरे कुछ लोग तिलक को पसंद नहीं करते, परन्तु जहां तक हम दोनों के व्यक्तिगत संबंधों का सवाल है, तो इसमें कोई मनमुटाव नहीं है।"

⇒ दोनों का होमरूल लीग अलग भले ही रहा परन्तु दोनों ने बेहतर आपसी ताल – मेल के साथ ऐसे टमटम गाड़ी की भांति कार्य किया, जिसमें दो घोड़े एक – दूसरे के आगे – पीछे लगे होते हैं, परन्तु खींचते एक ही टमटम को हैं।

Divyaj Singh

चुड़ियाँ: विपिन चन्द्र पाल

⇒ होमरूल आंदोलन के चलाए जाने का विचार सर्वप्रथम बेसेंट के दिमाग में आया, परंतु होमरूल लीग की स्थापना सर्वप्रथम बाल गंगाधर तिलक के द्वारा की गई।

तिलक होमरूल लीग – (महाराष्ट्र होमरूल लीग)

① स्थापना वर्ष – 28 अप्रैल 1916
② अध्यक्ष – जोसेफ बेप्टिस्टा
③ सचिव – एन. सी. केलकर
④ अन्य सदस्य – जी. एस. खपर्डे, बी. एस. मुंजे तथा आर. पी. कारंदीकर
⑤ प्रसार क्षेत्र – कर्नाटक, महाराष्ट्र (बम्बई को छोड़कर), मध्य प्रांत, बरार।
⑥ मुख्यालय – पुणे (महाराष्ट्र)
⑦ समाचार पत्र – केसरी (मराठा भाषा में) तथा मराठा (अंग्रेजी भाषा में)

⇒ तिलक इसके सर्वेसर्वा थे, परन्तु इन्होंने कोई पद स्वीकार नहीं किया।

एनी बेसेंट होमरूल लीग – (इंडियन होमरूल लीग)

① स्थापना वर्ष – 1 सितंबर 1916
② अध्यक्षा – एनी बेसेंट
③ सचिव या संगठन मंत्री – जार्ज अरूंडेल
④ महासचिव – रामास्वामी अय्यर
⑤ कोषाध्यक्ष – बी. पी. वाडिया
⑥ प्रसार क्षेत्र – तिलक के क्षेत्र को छोड़कर शेष भारत
⑦ मुख्यालय – अड्यार (मद्रास)
⑧ समाचार पत्र – न्यू इंडिया तथा कॉमनवील

⇒ एनी बेसेंट को एक बड़ा लाभ यह था कि वह जिस थियोसोफिकल सोसायटी से जुड़ी थी, उसकी शाखाएं प्रायः प्रत्येक जिले एवं प्रांत में थी। बेसेंट के आंदोलन प्रारंभ करते ही थियोसोफिकल सोसायटी की प्रत्येक शाखा होमरूल लीग की शाखा बन गयी।

⇒ तिलक के होमरूल लीग के शाखाओं की संख्या बेसेंट के होमरूल लीग से काफी कम थी, जबकि तिलक के होमरूल लीग के सदस्यों की संख्या एनी बेसेंट की लीग के सदस्यों की संख्या से अधिक थी।

⇒ यद्यपि सदस्यों की संख्या एनी बेसेंट के लीग में कम थी, तथापि उस समय के जितने भी प्रमुख व्यक्ति थे, वे करीब-करीब बेसेंट के लीग के सदस्य थे, जैसे – मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, तेजबहादुर सप्रु, सी. वाई. चिंतामणि, हसन ईमाम, मोहम्मद अली जिन्ना।

⇒ एनी बेसेंट के महाराष्ट्र की मुंबई शाखा को संभालने की जिम्मेदारी मोहम्मद अली जिन्ना को सौंपी गयी।

⇒ इस आंदोलन के दौरान जन सभाओं को जगह-जगह पर संबोधित किया गया और सरकार की तीखी आलोचना की गई तथा जनता से जुड़े प्रश्नों को उठाया गया।

⇒ सोये हुये नौजवानों की जागृति के लिए एनी बेसेंट ने पूरे देश का तूफानी दौरा किया। उन्होंने कहा – "मैं भारत में वैतालिक का कार्य कर रही हूँ।"

⇒ उन्होंने इस बात की घोषणा की कि "मैं एक भारतीय ढोल हूँ, जिसका उद्देश्य समाज के सोने वालों को जगाकर उन्हें मातृभूमि की सेवा में लगाना है।"

⇒ बेसेंट बहुत अच्छी लेखिका, कुशल वक्ता एवं अप्रतिम संगठनकर्ता थी।

⇒ प्रसिद्ध नाटककार जॉर्ज बर्नाड शॉ ने एक बार बेसेंट की कार्य क्षमता का उल्लेख करते हुए कहा था कि "स्त्री होकर भी वह तीन आदमियों के बराबर कार्य कर सकती थी।"

⇒ भारतीय राष्ट्रवाद तथा राजनीति पर उन्होंने दो प्रमुख ग्रन्थ लिखे 'इंडिया ए नेशन' (भारत एक राष्ट्र) तथा 'हाउ इंडिया फॉट फॉर फ्रीडम' (भारत ने अपनी स्वतंत्रता का निर्माण कैसे किया) दूसरी वाली पुस्तक में उन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि बतलाया है।

⇒ "अर्जेक्स" उपनाम से भी लेखन कार्य किया।

⇒ उन्होंने एक पुस्तक 'वेक अप इंडिया' की रचना की और भगवदगीता का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया।

⇒ उनकी 'द इंडियन आइडियल्स' (भारतीय आदर्श) नामक पुस्तक भारतीय समाजशास्त्र को दिया गया उनका एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।

⇒ महात्मा गांधी ने उन्हें 'बसंत देवी' की उपाधि से विभूषित किया।

→ The indian ideals.
→ wake up India
→ India: A Nation
→ How india fought for freedom

⇒ मद्रास सरकार ने 16 जून 1917 को एनी बेसेन्ट को उनके दो सहयोगियों बी. पी. वाडिया एवं जॉर्ज अरूंडेल के साथ नजरबंद किया।

⇒ इसके विरोध में पूरे देश में सभायें हुयी जुलूस निकले, जिसमें महिलाओं ने भी खुलकर भाग लिया।

⇒ सर सुब्रमण्यम अय्यर ने 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी जो कि किसी राजनीतिक मुद्दे को लेकर उपाधि लौटाने की भारत में पहली घटना थी।

मांटेग्यू घोषणा → २० अगस्त 1917 -

⇒ इस आंदोलन का एक परिणाम मांटेग्यू घोषणा के रूप मे सामने आया। (20 अगस्त 1917)

⇒ घोषणा – भारत सचिव मांटेग्यू ने किया।

⇒ अगस्त माह में घोषित होने के कारण इसे अगस्त घोषणा कहा गया। इसके द्वारा भारतीय प्रशासन में भारतीयों को क्रमिक रूप से भागीदार बनाने की बात स्वीकार कर ली गयी।

⇒ इस मांटेग्यू घोषणा में कहा गया – ब्रिटिश सरकार की यह नीति है कि भारतीय प्रशासन में भारतीय जनता को भागीदार बनाया जाए और स्वशासन के लिए स्थानीय संस्थाओं का क्रमिक रूप से विस्तार किया जाए।

⇒ नरमपंथी इसे स्वीकार करना चाहते थे, वहीं गरमपंथियों ने इसे अपर्याप्त बतलाया।

⇒ नरमपंथियों ने इसे 'भारत का मैग्नाकार्टा' कहा।

⇒ नरमपंथी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में कांग्रेस से अलग हटकर 1918 में एक संस्था 'भारतीय उदारवादी संघ' की स्थापना की।

⇒ इस प्रकार कांग्रेस का यह दूसरा विभाजन हुआ। 1907 के सूरत कांग्रेस अधिवेशन में जहां गरमपंथी अलग हो गए थे, वहीं 1918 में नरमपंथी ही कांग्रेस से अलग हट गए।

⇒ मांटेग्यू की घोषणा के चलते सितंबर 1917 में एनी बेसेंट को रिहा कर दिया गया। इस समय उनकी लोकप्रियता अपने चरम पर थी।

Dr Vijay Sir GS

⇒ इसलिए इन्हें तिलक के प्रस्ताव पर दिसम्बर 1917 ई० के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष चुन लिया गया।

⇒ इसी मांटेग्यू घोषणा के आधार पर 1918 ई० में एक रिपोर्ट तैयार की गई, जिसे 'मॉटेग्यू - चेम्सफोर्ड रिपोर्ट' कहकर पुकारा गया।

⇒ इसी रिपोर्ट के आधार पर 1919 में प्रथम भारत सरकार अधिनियम तैयार किया गया, जिसे 'मांटेग्यू - चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम' कहकर पुकारा गया।

मांटेग्यू - चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम (1919)

⇒ 1916 में होमरूल आंदोलनकारियों ने शांतिपूर्ण व संवैधानिक आंदोलन के प्रावधानों के अंतर्गत रहते हुए स्वशासन की जो मांग की थी, उसके परिणामस्वरूप अगस्त 1917 को मांटेग्यू घोषणा की गयी।

⇒ मांटेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के आधार पर एक विधेयक 28 मई 1919 को हाउस ऑफ कामंस में प्रस्तुत किया गया तथा लॉर्ड सेलबोर्न की अध्यक्षता में नियुक्त एक विशेष संयुक्त समिति को सौंप दिया।

⇒ संसद के दोनों सदनों में समिति द्वारा संशोधित रूप में इस विधेयक पारित कर दिया गया।

⇒ 23 दिसम्बर 1919 को विधेयक पर सम्राट की स्वीकृति प्राप्त हो गई और उसके बाद यही विधेयक भारत सरकार अधिनियम या 'मांटेग्यू - चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम' के नाम से जाना गया।

अधिनियम के प्रावधान -

⇒ प्रांतों में पहली बार द्वैध शासन की स्थापना की गई। प्रांतीय विषयों को दो भागों में विभाजित किया गया।

① आरक्षित → गवर्नर + council

② हस्तांतरित → मंत्रिमण्डल

⇒ पहली बार केन्द्र एवं राज्य का बजट भी पृथक कर दिया गया।

⇒ पहली बार केन्द्र में द्विसदनीय विधानमण्डल का गठन किया गया।

① राज्य परिषद (उच्च सदन) -

60 सदस्य < 34 निर्वाचित
26 मनोनीत

* नियुक्ति 5 वर्ष के लिये होती थी।

Divijay Singh

② विधान सभा (निम्न सदन) -

145 सदस्य ← 105 निर्वाचित ✓
40 मनोनीत ✓

⇒ भारत राज्य सचिव को अब केवल अंग्रेजी राजस्व से मिलने लगा।
⇒ इंग्लैण्ड में एक भारतीय उच्चायुक्त नामक पदाधिकारी को नियुक्त किया गया। इसके द्वारा गवर्नर जनरल को कुछ अध्यारोही शक्तियां प्रदान की गई, जैसे -

① कुछ विषय बिना उसकी अनुमति के पुनः स्थापित नहीं किये जा सकते थे।
② विधान मण्डल द्वारा पारित किसी भी विधेयक को वीटो करने या सम्राट की अनुमति प्राप्त करने की शक्ति दी।

Digvijay Singh